# आधुनिक राजनीति और रामराज्य परिषद



लेखक
स्वामी श्री करपात्रीजी महाराज

प्रकाशक
प्रचार मंत्री
सन्त शरण वेदान्ती
अ० भा० रामराज्य परिषद

मूल्य
आठ आना

सन् १९७४

# रामराज्य की आवश्यकता

"कुछ लोग हिन्दू राज्य स्थापित होने से सुख शान्ति का स्वप्न देखते हैं, परन्तु मैं स्पष्ट कह देता हूँ कि यदि रामराज्य न हुआ, शासक राम के समान धर्म नियन्त्रित, सदाचारी, जितेन्द्रिय न हुआ तो उस हिन्दू राज्य से भी कल्याण होने वाला नहीं। हिन्दू राज्य का रावण राज्य तो ब्राह्मण राज्य था, वेन राज्य क्षत्रिय राज्य था, पर क्या उसमें सुख शान्ति मिलि? इतना ही क्यों एक समय देवराज्य इन्द्र भी घमण्ड में उन्मदान्ध होकर जब अनियन्त्रित और अजितेन्द्रिय हो गये, उस समय उनके शासन में प्रजा संत्रस्त हो गयी और दरिद्रता दीनता और पराधीनता का उपद्रव खड़ा हो गया। अतः हिन्दू राज्य, ब्राह्मण-राज्य क्षत्रिय राज्य से भी जनता का कष्ट नहीं दूर हो सकता। इस लिए जनता को धर्म राज्य ही चाहिए। यों तो आज भी बहुमत का राज्य है। भारत में बहुमत हिन्दुओं का ही है, इस दृष्टि से हिन्दुओं का ही राज्य है। राष्ट्रपति प्रधान मन्त्री आदि हिन्दू ही हैं, फिर भी यदि गोहत्या जारी है, वेदादि शास्त्र एवं वैदिक धर्म निध्वंशक हिन्दू कोड बनाने का हठ जारी ही है, तो फिर ऐसे हिन्दू राज्य से क्या लाभ? इसी ढंग के दूसरे तीसरे हिन्दू राज्यों से काम नहीं चलेगा, जब तक रामराज्य न होगा, अर्थात् धर्म नियन्त्रित सदाचारी, जितेन्द्रिय शासक का राज्य ही रामराज्य, ईश्वर राज्य तथा धर्मराज्य है।

**पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज**

('सिद्धान्त' वर्ष १० अंक ८)
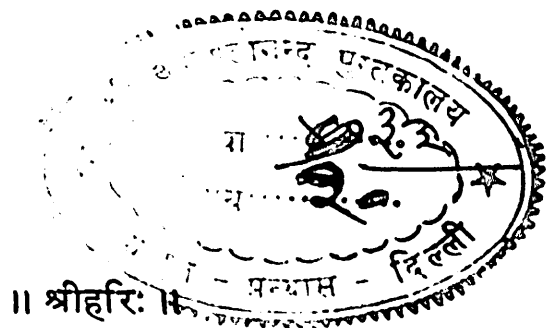
॥ श्रीहरिः ॥

# मानव-जीवन का लक्ष्य

भगवत्तत्त्व साक्षात्कार एवं भगवत्पादारविन्दु परमानुराग ही मानव जीवन का अन्तिम ध्येय है। अध्यात्मवादी रामराज्य परिषद की दृष्टि में विश्व का निर्माण जड़प्रकृति या जड़ परमाणुओं के पुञ्ज अथवा विद्युत कणों के संघर्ष का परिणाम नहीं है जब रेल, तार, रेडियो, मोटर, टेलीविजन, वायुयान, परमाणु बम, हाइड्रोजन आदि आधुनिक यन्त्र किसी बुद्धिमान की बुद्धि एवं कृति के परिणाम समझे जाते हैं, अपने आप उनका निर्माण असम्भव समझा जाता है, तब फिर चन्द्र, सूर्य, समुद्र, पर्वत, पृथ्वी एवं आधुनिक सभी यन्त्रों के आविष्कारक मनुष्य एवं उसके दिल-दिमाग मस्तिष्क या बुद्धि का निर्माण अपने आप हो गया हो या जड़ प्रकृति से ही हो गया हो यह नहीं कहा जा सकता है। जब मोहञ्जोदड़ो एवं हरप्पा की खुदाइयों में मिली हुई रङ्ग-बिरङ्गी वस्तुओं का कोई निर्माता माना जाता है तो शुक, पिक एवं मयूरादि के अङ्गों के मनोरम रङ्ग एवं विचित्र चित्रकारियों का कोई चेतन निर्माता अवश्य ही होना चाहिये। विविध वन्य, पुष्पों, स्तवकों एवं फलों की सुन्दरता, सरसता मधुरता का निर्माण तथा फूलों पर बैठने वाली तितिलियों की आकर्षक चमकीली रङ्ग-बिरङ्गी साड़ियों की रचना अवश्य ही किसी सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कृति मानना युक्त है।

उस आप्तकाम, पूर्णकाम परमेश्वर ने अनादि अविद्या काम कर्म से परिप्लुत प्राणियों के कल्याणार्थ ही विश्व को बनाया है, जैसे बीज से अंकुर और अंकुर से बीज की उत्पत्ति होती है, उसी तरह सोने के बाद जगना और जागने के बाद सोना तथा जन्म के पहले कर्म एवं कर्म के पहले जन्म की अनादि परम्परा माननी पड़ती है। इस भवाटवी में भटकते हुए प्राणी को तब तक विश्राम नहीं मिलता है जब तक विश्व के अधिष्ठान परात्पर-ब्रह्म भगवान की प्राप्ति नहीं होती। संसार दशा में भी संसार के सब सुखों में श्रेष्ठ निद्रा सुख माना जाता है। सर्वसाधन सम्पन्न सम्राट् स्वराट् भी निद्रा के बिना पागल हो जाता है। उपनिषदों के अनुसार जाग्रत स्वप्न में भटकते हुए प्राणी को विश्राम के लिये निद्राकाल में परमेश्वर की प्राप्ति होती है। जैसे सूत्रानुबद्ध बुलबुल या श्येन

(बाज) आदि पक्षी दिशाओं में भटकता-भटकता परेशान होकर विश्राम के लिए बन्धन के आधार पर ही आकर बैठता है उसी तरह कर्मानुबद्ध प्राणी भी भटकते-भटकते परिश्रान्त होकर विश्राम के लिए निद्राकाल में भगवान् को ही पाकर शान्ति पाता है। किन्तु अविद्या काम कर्म का बन्धन बिना मिटे उस समय योगमाया के आवरण से आवृत भगवान की ही उसे प्राप्ति होती है। निवारण भगवान नहीं मिलते हैं। इसीलिए पूर्ण विश्राम एवं सदा के लिए पूर्ण शान्ति तब तक नहीं मिलती है। जब तक अविद्या कामकर्म से मुक्त होकर मेघावरण निर्मुक्त सूर्य के तुल्य मायावरण विहीन ब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती। बस इसीलिये सृष्टि का निर्माण है। एवं देह इन्द्रिय मन बुद्धि की आवश्यकता है और स्वधर्मानुष्ठान, उपासना, वेदान्त विचार, मनन निदिध्यासन आदि भी आवश्यक है।

## धर्मनीति एवं राजनीति

भगवत्तत्त्व साक्षात्कार भगवद्भक्ति बड़े महत्व की वस्तु है। परन्तु जैसे किसी महौषध के सेवन के लिए कुपथ्यवर्जन; पथ्यपालन एवं अनुपान सेवन अत्यावश्यक है उसी तरह भगवत्तत्व विज्ञान या भक्ति में स्वधर्मपालन एवं विधर्म अधर्म आदि परिवर्जन अनिवार्य है। तदर्थ देहरक्षण, देहयात्रा आदि के लिए अपेक्षित काम अर्थात् उचित एवं आवश्यक विषय-भोग तथा अर्थार्जन भी आवश्यक होता है। जैसे कोई बद्रीनारायण के दर्शन के उद्देश्य से यात्रा कर रहा हो फिर भी उसे भोजन, जलपान, शयन, विश्राम आदि करना अनिवार्य है तथा मार्ग में व्याघ्रादि हिंस्र प्राणियों तथा डाकुओं का आत्मरक्षण के लिए मुकाबिला भी करना अनिवार्य है। क्योंकि ऐसा न करने से मार्ग में ही मृत्यु हो जायगी। बद्रीनारायण का दर्शन भी असम्भव हो जायगा। अतः भगवत् प्राप्ति के मार्ग में धर्म, अर्थ, काम का एवं नीति यथायोग्य आदर भी आवश्यक हो जाता है। दंड नीति के नष्ट हो जाने पर वेदादि शास्त्र एवं तदुक्त धर्म कर्म सब डूब जाते हैं। 'मज्जेत्त्रयी दण्ड नीतौ हतायाम्।' कृत युग में जब सत्वगुण का पूर्ण विकास था और सभी धर्मनिष्ठ थे, तब तो कोई किसी का शोषक, भक्षक, अशुभचिन्तक नहीं था। सब एक दूसरे के पोषक, रक्षक, शुभचिन्तक ही थे। तब राजनीति, दंड-नीति की कोई आवश्यकता नहीं थी। धर्मनियन्त्रित जनता धर्म के प्रभाव से आपसी सद्व्यवहारों से बिना राजा या दण्ड नीति के ही सब काम चला लेती थी। पश्चात् रजोगुण एवं तमोगुण के बढ़ जाने एवं अधर्म के विस्तार हो जाने से प्रजा में मात्स्य न्याय फैल गया।

मात्स्य न्याय का अर्थ है कि जैसे बड़ी-बड़ी मछलियाँ छोटी-छोटी मछलियों का भक्षण करती हैं। जंगल के प्रबल जन्तु दुर्बल जन्तुओं के भक्षक बन जाते हैं। मूषक बिल्ले से बिल्ला श्वान से, श्वान भेड़िये से, भेड़िया व्याघ्र से, व्याघ्र सिंह से संत्रस्त होता है वैसे ही दुर्बल मनुष्य प्रबल मनुष्य से संत्रस्त होता है। क्रमशः उस हालत में राज्य व्यवस्था एवं राजनीति अनिवार्य हो जाती है। अतएव धर्म प्रतिष्ठापन, सत्य का विकास, अहिंसा, सत्य का व्यवहार फैलाकर एवं सदाचार सद्विचार को ठुकरानेवाले अन्यायी को उग्र दण्ड देकर मात्स्य न्याय मिटाना तथा धर्म एवं जान माल की रक्षा करना दंड नीति का मुख्य उद्देश्य रहा है। वेद, रामायण, महाभारत तथा मनु, शुक्र, वृहस्पति, नारद, अंगिरा, कौटल्य, कामन्दक आदि भारतीय राजनीति तत्त्ववेत्ताओं एवं सुकरात, अरस्तू, अफलातून, हीगेल, कांट, फिक्टो आदि पाश्चात्य राजनीति विशारदों का भी यही मत था। हाब्स, लाक, रूसो आदि ने भी जान-माल की रक्षा को राज्य व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य माना है। निरपेक्ष या सापेक्ष सभी सामाजिक अनुबन्धों ( सोशल कण्ट्रैक्ट ) में जान माल की रक्षा मुख्य थी। श्री भीष्म के मतानुसार सुव्यवस्था के लिए ही मनुष्यों ने अपने समान ही दो हाथ दो पाँव वाले एक मनुष्य को राजा मान कर उसे अपने अनेक अधिकारों को सौंपा था। हाब्स जैसे कुछ लोगों को छोड़कर भारतीय एवं अभारतीय सभी राज-नीतिज्ञों ने स्वीकार किया है कि अगर किसी राजा या सरकार या हुकूमत से उक्त उद्देश्य की पूर्ति नहीं होतो तो उसे हटा देना जनता का कर्तव्य है। उसी आधार पर रावण जैसे ब्राह्मण, वेन और कंस जैसे क्षत्रिय शासकों को नष्ट कर दिया गया था अथवा हटा दिया गया था। जैसे हाथी पर अंकुश, उष्ट्र पर नकेल, घोड़े पर लगाम आवश्यक है, सायकिल एवं मोटर पर सही ब्रेक आवश्यक है, ठीक उसी तरह किसी भी हुकूमत पर अंकुश आवश्यक है। उसके बिना जनता का धर्म एवं जान माल खतरे में पड़ जाता है। राजनीति ग्रन्थों में शासक को सर्वथा धर्म के नियन्त्रण में रखना अनिवार्य कहा गया है। इसलिए धर्मको क्षत्र का भी क्षत्र अर्थात् राजा का भी राजा कहा गया है। 'तदेतत् क्षत्रस्य क्षत्रम्' राजा संसार पर शासन करता है धर्म पर नहीं, इसलिये प्रायः सभी राष्ट्रीय संविधानों एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ के मानवाधिकार घोषणा पत्र में भी धार्मिक स्वाधीनता का सिद्धान्त मान्य किया गया है।

## समाजवाद की अयुक्तता

दुर्दैववश आज कुछ जड़वादी राष्ट्रों में तथा उनसे प्रभावित भारत में जड़वाद का ही विस्तार हो रहा है। हाब्स जैसे कुछ पाश्चात्य विचारकों ने

शासन एवं शिक्षा के क्षेत्र से धर्म एवं दैवी प्रभाव को निकाल-बाहर करना आवश्यक समझा, तब से धर्म निरपेक्ष या धर्महीन राज्य एवं धर्महीन शिक्षा-का विस्तार प्रारम्भ हो गया। आगे बढ़कर मार्क्स, एञ्जेल्स आदि ने नैसर्गिक नियमों एवं सामाजिक अनुबन्धों को भी निकाल-बाहर किया और उन्होंने घोषित किया कि विकासवाद के अनुसार अचेतन से ही चेतन की उत्पत्ति होती है, ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है। इतना ही नहीं जैसे गोबर से बिच्छु, सड़ी लकड़ियों से दीमक, गीले बालों से जूं आदि उत्पन्न होते हैं वैसे ही माता-पिता के खून या शुक्रशोणित से ही देह, दिल, दिमाग, मस्तिष्क के समान ही चेतना की भी उत्पत्ति होती है। अतः जीवित देह से भिन्न नित्य आत्मा को ढूंढ़ना मूर्खता की बात है। जैसे गुलाब के डण्ठल से पत्ते, टहनी, कांटे होते हैं वैसे ही डण्ठल से ही मनोरम पुष्प भी पैदा होते हैं। जैसे आम की गुठली से अंकुर नाल शाखा उपशाखा पत्र उत्पन्न होते हैं वैसे ही फल एव मधुरस भी गुठली का ही परिणाम है। उसी तरह दिल दिमाग की तरह चेतना या ज्ञान भी भूतका ही परिणाम है। देह, दिल, दिमाग से अलग कहीं भी ज्ञान का उपालम्भ नहीं होता। भूत प्रकृति से विकास क्रम से बने सूर्यमण्डल से ही चन्द्रमण्डल एवं भूमण्डल का निर्माण हुआ। भूमण्डल से भाप, बादल, पानी की उत्पत्ति हुई और अमीबा हाइड्रा मछली, मण्डूक, कच्छप, गोधा और फिर पक्षी फिर जानवर फिर लंगूर, बन्दर, वनमानुष एवं पुनः मनुष्य का क्रमेण विकास हुआ है। इसमें किसी धर्म, कर्म या दैवी शक्ति का कोई हाथ नहीं है। प्राकृतिक उपद्रवों से भयभीत जङ्गली मनुष्यों ने भीरुता के कारण ही भूत, प्रेत तथा देवता की कल्पना की है। जादू, टोना, मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ के विकास का भी आधार भीरुता एवं अज्ञान ही था। भूत-प्रेत की कल्पना ही सभ्यता एवं विज्ञान के साबुन से धुलते धुलते देवता एवं ईश्वर की कल्पना हो गयी। जङ्गली मनुष्यों के भय एवं अज्ञान से कल्पित जादू-टोना ही वैज्ञानिक चमत्कृति से चमत्कृत होकर ईश्वर ब्रह्म एवं मन्त्र-तन्त्र बन गये। मार्क्स के मतानुसार मनुष्य के सामने ईश्वर या ब्रह्म का साक्षात्कार धर्मानुष्ठान आदि कोई समस्या नहीं है, मुख्य समस्या है रोटी, कपड़ा आदि जीवन निर्वाह के आवश्यक साधनों के उत्पादन एवं उचित वितरण की। उसी के अनुसार सब नियम बनते-बिगड़ते रहते हैं। उत्पादन साधन में रद्दोबदल होने से माली हालत में रद्दोबदल होता है। माली हालत में रद्दोबदल होने से धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, आर्थिक सब प्रकार के नियमों में रद्दोबदल हो जाता है। हाथ चक्की और भाप की चक्की का समय भिन्न-भिन्न है तदनुसार ही विभिन्न समयों की माली हालत भी

भिन्न ढङ्ग की होती है। संसार में विकास का क्रम अनवरत चल रहा है। मानवता का इतिहास प्रगति का इतिहास है। इसमें पीछे हटना असम्भव है, आगे बढ़ना ही स्वाभाविक है। नये-नये युगों में नये-नये उत्पादन साधन पैदा हो रहे हैं। विभिन्न प्रकार के यन्त्र, कल-कारखाने बनते जा रहे हैं। लाखों मनुष्यों के काम आज हजारों एवं सैकड़ों से सम्पन्न हो रहे हैं। उत्पादन का विस्तार बढ़ रहा है, साथ ही मनुष्यों की बेकारी बढ़ रही है। क्रयशक्ति घटने से उत्पन्न हुए माल की खपत में भी बाधा पड़ रही है। धन सम्बन्धी पुराने नियम आज अनुपयोगी ही नहीं किन्तु बाधक भी सिद्ध हो रहे हैं। अतः वेद, मनु, आदि के पुराने धार्मिक, आर्थिक नियमों एवं दायभाग भूमि, सम्पत्ति आदि सम्बन्धी पुराने नियमों को मिटाकर भूमि, सम्पत्ति एवं कल-कारखानों का समाजीकरण होना आवश्यक है। पंडित नेहरू के शब्दों में भी समाजवाद ही वर्तमान समस्याओं का एकमात्र हल है। कहा जाता है कि हवाई जहाज के जमाने में बैलगाड़ियों पर चलना, हाइड्रोजन बम के जमाने में पत्थरों के औजारों से लड़ना नामुमकिन एवं अनुपयुक्त है। इसी तरह आज धर्म एवं अधर्म तथा वेद पुराण, बाइबिल आदि के पुराने नियमों को मानना असम्भव है।

परन्तु डार्विन का विकासवाद एवं मार्क्स का भौतिकवाद संगत नहीं है। संसार में कोई भी विलक्षण कार्य अचेतन से उत्पन्न होता हुआ नहीं दिखाई देता। बिच्छू, दीमक, जूँ आदि का अचेतन शरीर ही गोबर आदि से उत्पन्न होता है। काष्ठ पर अभिव्यक्त अग्नि के समान चेतना तो जैसे शुक्र शोणित उद्भूत शरीर में अभिव्यक्त होती है वैसे ही गोमयादि प्रभूत शरीरों में अभिव्यक्त होती है। काष्ठादि बिना यद्यपि अन्यत्र अग्नि की अभिव्यक्ति नहीं होती फिर भी अग्नि स्वतन्त्र तत्व मान्य है, काष्ठादि का धर्म नहीं माना जाता है। उसी तरह भले ही देह, दिल, दिमाग आदि में ही चेतना की अभिव्यक्ति हो, फिर भी वह स्वतन्त्र तत्व हैं, देहादि का धर्म नहीं है। वस्तुतस्तु बोध बिना, देह, दिल, दिमाग आदि की ही सिद्ध नहीं होती। अतः स्वतः सिद्ध स्वप्रकाश बोधके आधार पर ही भूत या भौतिक देहादि की सिद्धि होती है। वही अनन्त सर्वज्ञ बोधस्वरूप ब्रह्म विश्वका कारण है उसीका अंश जीव हैं। पूर्व कथानुसार जीवों के अनादि परम्परा प्राप्त जन्मान्तरीय कर्मों के अनुसार ही प्राणियों एवं सृष्टि की विचित्रता उत्पन्न होती है। चींटी का ऊँट बनना या मछली का चमगीदड़ बनना आदि सर्वथा अप्रामाणिक है। विशिष्ट ज्ञान, क्रिया एवं भाषा प्राणियों को पूर्वजों से ही सीखनी पड़ती है तभी पुस्तकालयों एवं विद्यालयों

की सार्थकता होती है। यदि पुत्र-पौत्रों, शिष्य-प्रशिष्यों की अपेक्षा पूर्वज पिता-पितामह गुरु-परमगुरु आदि असभ्य जङ्गली एवं अज्ञानी हैं, तब उनके विचारों, लेखों पत्रादिकों को पढ़ने में क्या लाभ होगा। फिर तो पुत्र से पिता एवं शिष्यों से गुरुओं को हं' शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। इस तरह किसी भी समझदार को मानना पड़ता है कि सर्वज्ञ ईश्वर एवं उसके नियम मानना प्राणियों के लिये अनिवार्य है। ईश्वरीय सृष्टि ईश्वरीय ग्रंथ प्राणियों के हितार्थ ही है तथापि अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही सृष्टि में प्राणियों को भोग साधन प्राप्त होते हैं। अतएव धर्म, कर्म का नियम दाम, जप, क्रय एवं समाधि से प्राप्त बसीनी मिल्कियत वैध सम्पत्ति के शास्त्रीय नियमों का अक्षुण्ण रहना अनिवार्य है।

## भारत सरकार की धर्म-विरोधी नीति

जड़वादी भौतिक विचारों से प्रभावित होकर भारत सरकार भी भारत में समाजवादी ढङ्ग की समाज रचना करना चाहती है इसलिए सरकार द्वारा सेक्यूलर या धर्मनिरपेक्ष एवं धर्महीन राज्य बनाकर शिक्षा को भी सर्वथा धर्म से असंपृक्त बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। हिन्दू विवाह तलाक, उत्तराधिकार एवं मन्दिर प्रवेश आदि कानून बनाकर तो प्रत्यक्ष ही शास्त्रों एवं शास्त्रोक्त धार्मिक, सामाजिक नियमों की हत्या की जा रही है। एक ओर धर्मनिरपेक्षता का नाम लेकर गोहत्या बन्दी की बहुसम्मत मांग को ठुकराया जा रहा है, निर्दयतापूर्वक अंग्रेजी राज के समय से भी कई गुना ज्यादा गोवंश का संहार किया जा रहा है, दूसरी ओर बौद्ध मत फैलाने के लिए गरीबों की गाढ़ी कमाई का करोड़ों रुपया बौद्ध भिक्षुओं की अस्थियों के महोत्सव पर फूंका जा रहा है। इधर हिन्दू धर्म के मन्दिरों की मर्यादाओं को तोड़कर उन्हें नष्ट-भ्रष्ट किया जा रहा है। हिन्दू मठ, मन्दिरों की सम्पत्तियों तथा जमीन्दारियों को छीनकर उनका राष्ट्रीयकरण या सरकारीकरण किया जा रहा है। प्रसिद्ध बड़े-बड़े मंदिरों में भी भोगराग, पूजापाठ की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही है। जो लोग मजा-यबरों की मूर्तियों एवं मन्दिरों की मूर्तियों में तथा शौचालयों के पाषाणों और मूर्तियों के पाषाणों में कुछ भेद नहीं समझते वे ही आस्तिकों के विश्वासों एव धार्मिक भावनाओं को तोड़ने के लिये मन्दिरों में बेरोकटोक सबको घुसाना चाहते हैं। जहां पहले अंग्रेजी राज्य में मारे हुए गायों बैलों के १५ लाख चमड़ों का निर्यात होता था वहां आज स्वराज्य में मारे हुए गायों बैलों के ८० लाख चमड़ों का निर्यात हो रहा है। हिन्दू विवाह तलाक के द्वारा आज

मनमानी शादी एवं मनमानी तलाक को बढ़ावा दिया जा रहा है। मेहतर चमार आदि हरिजनों के लड़कों से शादी करने पर ब्राह्मण, क्षत्रिय को पाँच-पाँच हजार इनाम की घोषणा की जा रही है। यद्यपि एक ईमानदार भगवद्भक्त मेहतर, चमार एक बेईमान ईश्वर विमुख ब्राह्मण से भी श्रेष्ठ है फिर भी शास्त्रा-नुसार कर्तव्य पालन हो तो श्रेष्ठता का आधार है। बैलों, घोड़ों की नस्ल सुधारने के लिए संसार के बुद्धिमान प्रयत्नशील हैं परन्तु यहां वशिष्ठ महर्षियों एवं मान्धाता तथा दिलीपादि राजर्षियों की सन्तानों में वर्णसंकरता फैलाने की कोशिश की जा रही है। मनमानी विवाह तलाक प्रचलित करने एवं सास्कृतिक समारोहों के नाम पर घरों की बहू-बेटियों को विदेशियों के सामने नचाकर भारत के मान बिन्दु को नष्ट किया जा रहा है। स्पष्ट है कि इस प्रकार शास्त्र विश्वास एवं पूर्वजों की मान-मर्यादा समाप्त हो जाने पर फिर भी भाई-बहन, पिता-पुत्री, माँ-बेटे की भी शादी होने लगेगी और मनुष्य भी कुत्ते की तरह एक पुच्छ विहीन पशु बन जायेगा।

## ईमानदारी की कमाई पर अधिकार

उत्तराधिकारी कानून से वैध सम्पत्तियों को नष्ट कर देने का प्रयत्न किया जा रहा है, राजाओं के राज्य तथा जागीरदारियां एवं जमींदारियाँ छीन ली गयीं, परन्तु किसानों को कुछ भी लाभ न हुआ। किसान जितना जमींदार को लगान देता था, अब उतनी ही सरकार को देता है। अब तो चकबन्दी के चक्कर में काश्तकारों की काश्तकारियाँ भी छिनी जा रही हैं। नये-नये टैक्स ऊपर से और बढ़ते जा रहे हैं। व्यापार पर, रोजगार पर एवं गाड़ी घोड़े, बैलों पर, भी टैक्स बढ़ाया जा रहा है। शिक्षा की फीस बढ़ती जा रही है। रेलवे कम्पनी और एयरवेज कम्पनी का सरकारीकरण पहले ही हो गया। जीवन-बीमा कम्पनी भी छीन ली गयी। विभिन्न अन्य व्यापारों एवं उद्योगों का भी सरकारी-करण हो गया। अवशिष्ट कम्पनियों, मिलों, कारखानों एवं व्यापारों का सरकारीकरण शीघ्रातिशीघ्र होनेवाला है। "सूची प्रवेशेण मुसल प्रवेशः" मार्क्स की नीति थी। पहले अंगुली धंसाकर ही मूसल धसाने का प्रयत्न करना एवं अंगुली पकड़कर ही पहुँचा पकड़ना मार्क्स ने ठीक समझा था। तदनुसार ही कांग्रेस सरकार भी धीरे-धीरे मार्क्सवाद की ओर देश को ले जा रही है। अन्त में सभी भूमि सम्पत्ति, कल-कारखानों एवं उद्योगों का सरकारीकरण करना सरकार का लक्ष्य है। उत्पादन का साधन एवं मुनाफा कमाने का साधन

व्यक्तियों के पास न रहने देकर सबका सरकारीकरण कर लेना मार्क्स के अनुसार सरकार का भी ध्येय है।

इस तरह व्यक्तियों का धर्म एवं धन दोनों ही नष्ट होने जा रहा है। भारत की प्रजासमाजवादी पार्टी, समाजवादी, साम्यवादी, एवं कम्यूनिस्ट पार्टी आदि का भी यही ध्येय है। धर्म एवं शासन तथा संस्कृति की चिल्लाहट मचानेवाला जनसङ्घ भी जाने विना जाने इसी ओर अग्रसर हो रहा है। उज्जैन से प्रकाशित होनेवाले संघी पत्र "समाज" में सन्घियों की स्पष्ट घोषणा का लक्ष्य है उनसे स्पष्ट सिद्ध होता है कि प्रायः जो कम्यूनिस्टों जैसे ही जनसंघ के भी लक्ष्य हैं।

आज उत्तरप्रदेश में काश्तकार संघ 'काश्तकारी रक्षा के लिये संघटित हो रहा है। भूस्वामी संघ राजस्थान एवं मध्यभारत में आन्दोलन कर रहा है। किसानों से भी निम्न स्तरवाले उन जागीरदारों की जागीरें छीन ली गयी हैं जिनके पास सिर्फ थोड़ा-थोड़ी भूमि हैं। जिन्हें तन ढकने को कपड़ा एवं पेट भरने को पूरा रोटी नहीं मिलती तथा बीमार बच्चे के इलाज के लिये चार पैसे भी नहीं मिलते। जो दुर्भाग्य से जागीर नामधारी हैं उन्हें सद्यः कोई मुआवजा भी नहीं दिया जा रहा है। १५ वर्ष में नगण्य मुआवजा देने की बात कही जा रही है।

आज का नाम प्रसिद्ध है, खेत किसका—जो जोते उसका, मकान किसका—जो रहे उसका। लगान या मकान भाड़ा देना जरूरी नहीं। इस तरह किसी का खेत, मकान, दुकान, कारखाना एवं जायदाद कोई भी छीन लेता है। आज दान में मिली हुई, इनाम में मिली हुई, गाढ़े पसीने की कमाई से खरीदी हुई तथा अपने पिता, पितामह एवं प्रपितामह से मिली हुई भूमि तथा सम्पत्ति भी छीनी जा रही है। बाप-दादा की भूमि सम्पत्ति बेटे-पोते का बपौती मिल्कियत नहीं समझी जा रही है। इस तरह सभी व्यक्ति धर्म कर्महीन, सभ्यता संस्कृति से हीन एवं भूमि सम्पत्ति से हीन होने जा रहे हैं। शासनयन्त्र मुट्ठी भर तानाशाहों के हाथ का खिलौना बन रहा है। व्यक्ति-व्यक्ति उसी शासनयन्त्र के नगण्य कल पुर्जे बनते जा रहे हैं। जैसे मार्क्सवादी रूस में गैरसरकारी अखबार नहीं, प्रेस नहीं, सरकार के विरुद्ध नोटिस पोस्टर निकालने, भाषण देने एवं सभा करने आदि की स्वाधीनता नहीं, कोई पार्टी सरकार के मुकाबिले एलेक्शन नहीं लड़ सकती, ठीक वही स्थिति भारत में होने जा रही है।

## लोकतन्त्र की विडम्बना

फिर भी कांग्रेसी कहते हैं कि यह जनता का राज्य है। जनता का कोई भी व्यक्ति राष्ट्रपति बन सकता है, कोई प्राइममिनिस्टर बन सकता है। परन्तु यह

कहना केवल मक्कारी है। जैसे किसी पक्षी का पैर काटकर एवं पङ्ख विहीन बनाकर उसे उड़ने की पूर्ण स्वतन्त्रता दे देनी, किसी मनुष्य का पांव काटकर उसे दौड़ने की मुकम्मिल आजादी दे देनी, केवल मक्कारी की बात है, उसी तरह व्यक्ति-व्यक्ति को धर्महीन एवं धनहीन बना कर उसे राष्ट्रपति बनने की आजादी देने की बात है ? राष्ट्रपति बनने के लिए तो ५०० लोक-सभायी मेम्बरों, एम० पी० लोगों का बहुमत मिलना आवश्यक है। परन्तु केवल एक एम० पी० बनने के लिये ही कम से कम ६५ हजार रुपये आवश्यक होते हैं। ५०० की जमानत तो पहले ही दाखिल करनी पड़ती है। इसी प्रकार नोटिसों, पोस्टरों, जीपों, लाउडस्पीकरों एवं कार्यकर्ताओं पर कम से कम २५०००) का खर्च आवश्यक है। जिन बेचारे गरीबों को पेट भरने को रोटी और तन ढकने को कपड़ा भी दुर्लभ है वे किसके घर से डाका डालकर २५ हजार लायेंगे। वस्तुतः जनता बिलकुल कङ्गाल होती जा रही है एम० पी० एवं एम० एल० ए० बनने के लिये उसके पास कहां से पैसा एवं कहां सामग्री है। किसी पार्टी ने मुश्किल से एक-आध एम० पी० के लिये सामग्री तैयार भी किया तो चुनाव के सरकारी अफसर सरकारी मन्त्रियों के इशारे पर दूसरी पेटी का वोट दूसरी पेटी में डालकर सरकारी पक्ष के व्यक्ति को ही जिता देते हैं। बड़े-बड़े प्रयत्न पुरुषार्थ से एक-आध एम० पी० या एम० एल० ए० हो भी गये तो भी उनकी कोई सुनवाई नहीं है। सरकारी पक्ष मनमानी अत्याचार करता रहता है।

अस्तु इस तरह आज भारतीय धर्म, संस्कृति, उपासना, और तत्व ज्ञान सभी ज्ञान सभी संकट में है। मन्दिर धर्म स्थान भी नष्ट-भ्रष्ट हो रहे हैं। शास्त्र की हत्या हो रही है। मातृभूमि एवं गोमाता की हत्या हो रही है। बाप दादा की बपौती मिल्कियत छिन रही है। दान इनाम की और मिली हुई एवं गाढ़े पसीने की कमायी से खरीदी वैध सम्पत्ति भी छिन रही है। परम्परा प्राप्त मानव के वैध अधिकार छिन रहे हैं। जिन वस्तुओं की रक्षा के लिये पूर्वजों ने त्याग बलिदान किये, अपने सिर कटाये, एवं खून बहाये वे सब चीजें आज हम लोगों की कायरता एवं कर्तव्य विमूढ़ता के कारण नष्ट हो रही हैं। यदि आज इन सब की रक्षा के लिये शीघ्र सावधान होकर एवं प्रमाद छोड़कर उचित कर्तव्य पालन में तत्पर न हुए तो शीघ्र ही इन सबका खात्मा हो जाएगा।

## रामराज्य परिषद का ध्येय

इस सर्वनाश से बचाने के लिए ही रामराज्य परिषद् का संघटन हैं। यह दीन ईमानकी रक्षा चाहने वालों बाप दादा की बपौती मिल्कियतकी रक्षा चाहने

वालों हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिक्ख, जैन, हरिजन एवं ब्राह्मण सभी का संयुक्त मोर्चा है। इसके द्वारा ही पुराण, कुरान, वेद, बाइबिल, मन्दिर, मस्जिद, गिर्जा एवं गुरुद्वारा सबकी रक्षा होगी। रामराज्य के अनुसार सभी अपने धर्म, संस्कृति एवं धर्म ग्रन्थों की रक्षा करेंगे, दूसरों के धर्म ग्रन्थों की रक्षा करेंगे, दूसरों के धर्म, संस्कृति धर्म ग्रन्थ एवं धर्म संस्थानों पर हमला नहीं करेंगे। किसान मजदूर, व्यापारी, जमीन्दार सभी अपनी गाढ़े पसीने की कमाई को सुरक्षित रख सकेंगे। रामराज्य में समर्थों, सम्पन्नों की सहायता द्वारा सरकारी प्रयत्नों से बेकारी बेरोजगारी का शीघ्रातिशीघ्र अन्त होगा। सबको सस्ता कपड़ा, सस्ती-रोटी, सस्ती-शिक्षा, सस्ता आवास स्थान मिल सकेगा। चींटी को कनभर हाथी को मन भर के अनुसार योग्यता, आवश्यकता का ध्यान रखते हुए सभी के लिये उचित काम, दाम आराम की व्यवस्था होगी। हर एक व्यक्ति सात्विक, धार्मिक जितेन्द्रिय होकर एक दूसरे का पोषक बनेगा। कोई किसी का शोषक, भक्षक नहीं रहेगा। जैसे रोगी या बीमार को नष्ट कर देना, डाक्टर वैद्य का बड़प्पन नहीं है किन्तु रोग एवं बीमारी मिटाना ही उनका कर्तव्य है उसी तरह वर्गों एवं व्यक्तियों के दोषों, शोषणों एवं उत्पीड़न की वृत्तियों को मिटाना ही रामराज्य का ध्येय है। वर्गों एवं व्यक्तियों को मिटाना लक्ष्य नहीं है। किसी भी अच्छे राज्य का सदा से ही यही लक्ष्य रहा है कि बाघ और बकरे एक घाट पानी पियें। कोई किसी का भक्षक शोषक न रहे। सब एक दूसरे के पोषक एवं पूरक बनें। किसी अङ्ग का मांस सड़ जाने पर दूसरे अङ्ग से मांस की भी सहायता ली जाती है। किसी अङ्ग की हड्डी सड़ जाने पर अन्य अङ्ग से हड्डी भी सहायता रूप में ली जाती है पर उन्हें विनष्ट करने का प्रयत्न नहीं किया जाता है। किन्तु उन्हें स्वस्थ बनाने का ही प्रयत्न किया जाता है। जिस कुएँ से पानी, जिस गाय से दूध लिया जाता है। उसे इस लायक रखा जाता है कि आगे भी उनसे सहायता ली जा सके। इस तरह एक वर्ग या व्यक्ति का बिना विनाश किये ही उससे सहायता ली जा सकती है और उन्हें पूरक बनाया जा सकता है। धर्म ग्रन्थों एवं पूर्वजों की मान मर्यादाओं तथा परम्पराओं को बिना माने भगवद्भक्ति भगवत्तत्व विज्ञान तथा भगवान् की प्राप्ति और परलोक की उन्नति तो दूर की बात है इस लोक में भी सुख शान्ति नहीं रहेगी।

दीन, ईमान की भावना बिना एवं ईश्वर विश्वास बिना केवल कानून या पुलिस पल्टन के बल पर चोरबाजारी, घूसखोरी, भ्रष्टाचार का भी अन्त न हो सकेगा। बेइमान मनुष्य अदालत को धोका देकर पुलिस की आँख में धूल

डालकर, गुप्तचर को चकमा देकर कानून की अवज्ञा कर सकता है। फिर दीन, ईमानवाली पुलिस तथा गुप्तचर एवं न्यायाधीश भी कहाँ से अच्छे आयेंगे। वे भी ठीक-ठीक वैसे ही काम करेंगे। क्या उनसे भ्रष्टाचार न हो सकेगा? धर्म विश्वास के ही बल पर तो आज भी देखते हैं कि एक घर में नवजवान, खूबसूरत भाई-बहन साथ-साथ रहते हैं, खाते हैं, सोते हैं, पुलिस का पहरा नहीं, घर में कोई तीसरा आदमी नहीं, तो भी महीनों, सालों साथ रहते हैं पर दोनों में से किसी के मन में बेईमानी नहीं आती। गङ्गा जल के तुल्य निर्मल निष्कलंक भाई-बहन का सम्बन्ध बना रहता है। परन्तु कुत्ता-कुत्ती, गधा-गधी नवजवान भाई-बहनों में भाई-बहन का सम्बन्ध नहीं रह जाता है। श्वान, सूकर और गर्दभ आदि में बहन, पिता-पुत्री का कोई सम्बन्ध नहीं रहता है। उनके लिये बहन पुत्री, माँ पत्नी सब एक ही जैसे हैं। धर्मबिना एवं दीन ईमान बिना मनुष्य में एवं गर्दभ में कोई विशिष्ट भेद नहीं रह जायेगा। जैसे जड़ यन्त्रों का आविष्कारक, चेतन बुद्धिमान अनिवार्य है उसी तरह विश्व निर्माता सर्वेश्वर परमेश्वर भी अनिवार्य है। फिर ईश्वर का नियम मानना भी अनिवार्य है। जब साधारण सरकारों के कानून मानने पड़ते हैं तब अरबों-खरबों सरकारों को बनाने बिगाड़ने वाली सरकारों की सरकार उस ईश्वर का भी कानून मानना अनिवार्य है। उन्हीं कानून के आधार पर मानवता, पशुता एव दानवता से पृथकता सिद्ध होती है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि ऐसे अन्यतम नियम हैं जिनका संसार भर की सभी सभ्य जातियाँ आदर करती हैं। साधनों के बदल जाने से, कुछ कल कारखानों एवं मशीनों के बना लेने मात्र से, कुछ माली हालत बदल जाने मात्र से शाश्वत धर्म नहीं बदल सकते हैं। चाहे हाथ की चक्की का जमाना हो चाहे भाप की चक्की का, चाहे करघे से कपड़ा बनाया जाये चाहे आधुनिक मशीनों से परन्तु अन्न और कपास तो सदा ही धरती से पैदा होते हैं। सदा ही प्राणी ईश्वर के दिये हुए पानी से ही प्यास बुझाता है। धरती के दिये हुये अन्न, फल और दूध से ही भूख मिटती है। सूर्य, चन्द्रमा के उगने अस्त होने का नियम सदा ही एक-सा चल रहा है। समुद्र में तिथियों के अनुसार नियमित घण्टों पर ज्वार भाटा आने का नियम ज्यों-का त्यों चालू है।

फिर धर्म एवं सत्य के शाश्वत नियम कैसे टूट जायेंगे। जब तक ईश्वर मरता नहीं, लड़ाई में हारता नहीं, अवकाश ग्रहण नहीं करता, इस्तीफा नहीं देता, अथवा हिमालय जैसी अपनी भूल स्वीकार नहीं करता तब तक उस सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान परमेश्वर के विश्व कल्याणकारी नियमों में कोई किस तरह रद्दोबदल कर सकता है।

## अविचारपूर्वक बढ़ना उन्नति नहीं

मानवता का इतिहास प्रगति का ही नहीं अवनति का भी है। आज हाइड्रोजन बम के आविष्कार को संसार के लोग वरदान नहीं अभिशाप मान रहे हैं। उस पर प्रतिबन्ध लगाने की बात सभी सोच रहे हैं। हर जगह आगे बढ़ना बुद्धिमानी नहीं। यदि किसी की मोटर आगे बढ़ते-बढ़ते खन्दक या दलदल के मुँह पर पहुँच जाय तो वहाँ आगे बढ़ने का अर्थ है खन्दक में गिर कर दलदल में फंस कर मर जाना। अतः ऐसी जगह गाड़ी को ब्रेक करना, पीछे हटाना ही बुद्धिमानी है। ठीक इसी तरह आज की भौतिक चमत्कृति के चाकचिक्य में, धर्म से एवं ईश्वर से नाता तोड़कर तथा शाश्वत कल्याणकारी ईश्वरीय नियमों को तोड़कर जड़वाद की मरुमरीचिका में आगे बढ़ते जाना बुद्धिमानी नहीं है।

मनुके अनुसार दाय, दान, क्रय, जय, श्रम आदि द्वारा प्राप्त वैधसंपत्तिका छीनना डाका है, चोरी है। किसी के वैध धन जायज संपत्ति को छीनना घोर पाप है। जनसंघी शास्त्र एवं धर्म की दुहाई देते हैं। पर क्या वे सिद्ध करने की हिम्मत कर सकते हैं कि भूमि सम्पत्ति कल-कारखाना छीन लेना किस शास्त्र एवं किस धर्म से सम्मत है? यदि छीना-झपटी भी राजनीति है तो चोरी और डाका किसे कहा जायेगा? हमारे शास्त्र तो कहते हैं, अति क्लेश से धर्म का अतिक्रमण करने से शत्रु प्रणिपात से जो धन मिलता हो वह त्याज्य है:—'अति क्लेशेन यव्यर्था धर्मस्यातिक्रमेण च, शत्रूणां प्रणिपातेन मा च तेषु मनः कृथा।' दूसरों को बिना सताये हुये खलों के दरवाजों पर बिना घुटना टेके, दुश्मन का चरण चुम्बन बिना किये व सत्पुरुषों के पवित्र मार्ग का उल्लंघन बिना किये प्राप्त हुए स्वल्प धन में भी सन्तुष्ट रहना श्रेष्ठ है। ईमानदारी की कमाई डाकू, चोर के पेट में भी नहीं हजम होती, अग्नि में न वह जलती है, न पानी में डूबती है। उसी कमाई से वंश वृद्धि, समृद्धि तथा दूध पूत की प्राप्ति एवं वृद्धि होती है। 'अकृत्वापरसंतापगत्वा खल मन्दिरम्, अनुलं घ्यसतांवर्त्म यत्स्वल्पमपित द्बहु।' वस्तुतः जनसंघी शास्त्र और धर्म तथा संस्कृति का नाम शास्त्र विश्वासी जनता को धोखा देने के लिये ही लेते हैं। उनका किसी एक भी शास्त्र पर विश्वास नहीं।

इसी बात पर श्री गोलवल्कर जी से समझौता नहीं हो सका। वे किसी भी शास्त्र किसी भी एक धर्म ग्रन्थ या आर्य राजनीतिक ग्रन्थ को मान लेने के लिये तैयार नहीं हुए और स्पष्ट कह दिया कि आजकल शास्त्र की बात नहीं

चल सकती है। इस समय तो शक्ति ही सब कुछ है। हिन्दू सभा की भी धर्म के सम्बन्ध में यही नीति है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोग एवं श्री गोलवल्कर धर्म एवं संस्कृति का नाम लेते हैं। परन्तु उसकी जानकारी का प्रयत्न नहीं करते। उनकी जानकारी एवं उनके व्याख्यान राजनीति से ही सम्बन्ध रखते हैं। इतना ही नहीं इन लोगों ने यह भी समझ रखा है कि छलछद्म ही राजनीति है। जरासंघ के मारने में श्रीकृष्ण ने तथा मुगलों से लड़ने में शिवाजी ने इसका प्रयोग किया है। अतः यह आवश्यक हैं। आज अल्प वयस्क, अपक्व बुद्धि बालकों को संघ में कबड्डी के साथ-साथ यही राजनीति पढ़ायी जाती है। राष्ट्र के लड़के संघ में पड़ कर सन्ध्या वन्दन सूर्यदर्शन वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय शास्त्रीय सदाचारों से वंचित होकर प्रेम के नाम पर सबकी रोटी खाकर वर्णव्यवस्था तोड़ कर छद्ममय बनते जा रहे हैं। वस्तुतः भारत की राजनीति एवं अर्थनीति सदा ही धर्म से ओतप्रोत रही है। धर्म किसी के दिमाग का फितूर नहीं है, किन्तु वेदादि शास्त्रों द्वारा बनाये गये कर्म ही धर्म है। शास्त्र के विपरीत भोजन, पान, विवाह आदि सब अधर्म ही है। धर्म-विहीन राजनीति विधवा के तुल्य होती है। फिर आज तो निर्वाचन एलेक्शन ही राजनीति है जिसमें जाल फरेब, दगाबाजी करना जायज माना जा रहा है। कभी पार्लियामेण्ट का, कभी विधान सभा का, कभी डिस्ट्रिक बोर्ड का, कभी म्युनिसिपल बोर्ड का निर्वाचन होता ही रहता है। यदि निर्वाचन में बेईमानी करना दोष नहीं है तो कभी न कभी कोई न कोई निर्वाचन प्रपंच चलता ही रहेगा। फिर प्राणीको दीनदार, ईमानदार बनने एवं परमेश्वर के सम्मुख जाने का कब अवसर मिलेगा। इस दृष्टि से कांग्रेसी, सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट, जनसङ्घी, हिन्दूसभायी आदि सभी शास्त्र धर्म एवं व्यक्तिगत वैध एवं बपौती मिल्कियत के विरोधी हैं। केवल मात्र रामराज्य परिषद ही धर्म-ग्रन्थों एवं नीति ग्रन्थों का समन्वय करके धर्मप्रधान राजनीतिकी पोषक है। 'अंजन कहा आँखि जो फूटै' रामराज्य के अनुसार जैसे आँख फोड़ने वालों के लिये अञ्जन की कोई कीमत नहीं, वैसे ही धर्मविरुद्ध राजनीति का तथा सम्पत्ति एवं शक्ति का कुछ भी मूल्य नहीं है।

धर्मात्मा साधु की ही विद्या, धन एवं शक्ति आदरणीय होती है जो ज्ञान, दान एवं रक्षण के काम में आती है। खल की विद्या, धन एवं शक्ति तो विवाद, घमण्ड एवं परपीड़न के ही काम में आती है। डाकुओं की शक्ति जैसे अनादर-णीय है वैसे ही धर्महीन तथा सिद्धान्तहीन कितनी भी बड़ी शक्ति क्यों न हो, आदरणीय नहीं है। पूर्वजों की नीति ठुकराने का ही परिणाम है देश का

विभाजन एवं अगार घर का विनाश। उसी के परिणामस्वरूप काश्मीर और पुर्तगाल पर विदेशियों के फौलादी पंजे गड़े हुए हैं। आये दिन भारत की अवशिष्ट भूमि पर भी पाकिस्तानियों के हमले होते रहते हैं। दक्षिण अफ्रीका और लंका के भारतीयों को अपमानित होना पड़ रहा है। पंचशील एवं सह अस्तित्व की मृगमरीचिका में मोहित करके, तटस्थता का नाट्य करते हुए भी भारत को रूसी चक्र में फंसाया जा रहा है। जिसका किसी दिन भीषण परिणाम हो सकता है और जिसके फलस्वरूप भारत के आस्तिक नागरिक धर्म एवं धन से विहीन होते हुए अन्तत: सदा के लिए परतन्त्रता के बन्धनों में बंध कर लोक-परलोक से भ्रष्ट हो जायेंगे।

अत: आस्तिकों को अपने पाँव पर ही खड़ा होना पड़ेगा, अपने ही भरोसे स्वर्ग देखने को मिलता है। अतः दीनदार ईमानदार होकर, ईश्वर परायण, शास्त्र विश्वासी होकर, शास्त्र तत्वज्ञान के लिए प्रयत्नशील रहकर संगठित होकर त्याग बलिदान के लिये अग्रसर होना आज समय की मांग है। अभी भी जनता में आस्तिकता है, ईश्वर एवं धर्म में जनता की आस्था है। अगर अखबारों, पोस्टरों, नोटिसों, प्रचारकों, के द्वारा जनता के कानों तक रामराज्य का सन्देश पहुंचाया जाय तो जागरुक जनता रामराज्य बनानेमें पूर्ण सहयोग दे सकती हैं। यद्यपि आज अनेक विद्वानों एवं साधुओं के नये सरकारी संघटन भी सरकारी नीति का समर्थन कर रहे हैं। वे गोहत्या एवं शास्त्र तथा धर्म की हत्या की जिम्मेदार कांग्रेसी सरकारों के कर्णधारों को ब्रह्मर्षि सन्त एवं दशरथ की उपाधियों से विभूषित कर रहे हैं। जिससे आज जनता भ्रम में पड़ गयी है कि कौन ईश्वर धर्म एवं शास्त्रों के पक्षपाती सन्त और कौन सरकारी सन्त हैं। फिर भी अनेकों विद्वान महात्मा सन्त सद्गृहस्थ आचार्य भी तत्परतासे धर्म-पक्षमें कार्य कर रहे हैं। यदि मिलजुल कर समय रहते शीघ्रातिशीघ्र उचित प्रयत्न किया गया, प्रचार साधन सामग्री का संग्रह और समुचित प्रयोग किया गया तो सफलता हाथ लग सकती है।

भीषण से भीषण समय में भी भगवान् के चरणों का सहारा लेकर हिम्मत के साथ प्रयत्न करने से सफलता मिलती है। अनेकों बार पराजित देवताओं को भगवान् की प्रार्थना के बल पर सफलता मिली है। किन्तु प्रार्थना के साथ तीव्र प्रयत्न भी आवश्यक है। भूखा प्यासा प्राणी रोटी पानी पाने के लिये प्रयत्न न करे केवल भूख प्यास मिटाने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करे, यह ठीक नहीं। कृषि आदि में विफलता न मिलने पर भी तद्विषयक प्रयत्न चलते ही रहते हैं और सफलतायें भी मिलती हैं।

कोई कारण नहीं कि जब नास्तिकों को सफलता मिलती है तब धर्मनिष्ठ भगवत्परायण आस्तिकों को सफलता नहीं मिलेगी। केवल उत्साह एवं तीव्र प्रयत्न की कमी है। उसके सम्पन्न होते ही सफलता निश्चित है। 'उत्थातव्यं जागृतव्यं यातव्यं भूति कर्मसु। भविष्यतीत्येवमनः कृत्वा सततमव्यथै॥' कवियों ने कहा है कि उठो, जागो, अपने अभ्युदय के कर्मों में लगो, अवश्य सफलता मिलेगी। यह निश्चय करके अव्यथित मन से काम में जुट जाओ

'यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः,
तत्र श्रीविजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।'

जहां विवेक, वैराग्य, धैर्य, विज्ञान के मूर्तिमान स्वरूप योगेश्वर कृष्ण एवं शौर्य, वीर्य तथा ओज तेज के मूर्तिमान स्वरूप धनुर्धर पार्थ रहते हैं वहां श्री, विजय, भूति और नीति ध्रुव है।

यदि आप वैराग्य, धैर्य, विवेक और विज्ञान (होश) एवं शौर्य्य, वीर्य और ओज तेज (जोश) लेकर तत्परता से अपने धर्म कर्म तथा बपौती मिल्कियत एवं वैध स्वत्व की रक्षा के निमित्त त्याग बलिदान के लिये तैयार न होंगे तो जीवन रक्षण भी दुर्लभ हो जायेगा। लोग सिरकी टोपी, पगड़ी भी छीन लेंगे। थाली की रोटी भी कुत्ता छीन लेगा। सुन्दरी स्त्री को भी गुण्डा ले भागेगा। फिर इस जीने से मरना ही अच्छा। इसीलिये तो बुद्धिमान लड़ कर जीने की अपेक्षा मरना अच्छा समझते हैं। क्षुद्र हृदय की दुर्बलता एवं नपुंसकता (हिजड़ापन) को छोड़कर हिम्मत बांध कर आगे बढ़ो। जीतोगे तो अपने धर्म संस्कृति तथा वैधस्वत्व की रक्षा का गौरव मिलेगा, मरोगे तो खुला स्वर्गद्वार मिलेगा।

जिनके पूर्वजों ने दूसरों के धर्म, सम्पत्ति एवं इज्जत की रक्षा के लिये खून बहाया है, सिर कटाया है, उनके देखते ही देखते उनकी अपनी ही बपौती सम्पत्ति छिने, बहू बेटियां बेइज्जत हों, धर्म, संस्कृति नष्ट हो उनके खून में बर्फ से कई डिग्री ज्यादा ठण्डक बनी रहे, खून में गर्माहट और जोश न आये तथा कुछ करने को प्रस्तुत न हों इससे बढ़ कर लज्जा की क्या बात हो सकती है? प्रत्येक सहृदय ईमानदार और दीनदार व्यक्तिको अब एक क्षण भर भी विलम्ब नहीं करना चाहिये तथा रक्षा के लिये तत्क्षण कटिबद्ध हो जाना चाहिये। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।

———